FREEDOM OF आवाज़

Kunwar Digvijay

Freedom of आवाज़

कुँवर

Kunwar

Freedom of आवाज़

कुँवर

Kunwar

First Edition

Delhi Poetry Slam

www.delhipoetryslam.com

PUBLISHED BY DELHI POETRY SLAM

Copyright © 2019

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed, or transmitted in any form or by any means, including photocopying, recording, or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher, except in the case of brief quotations embodied in critical reviews and certain other noncommercial uses permitted by copyright law. For permission requests, write to the publisher, addressed "Attention: Permissions Coordinator," at the e-mail address below.
permissions@delhipoetryslam.com

The poems within this Book are the author's personal thoughts. They are not intended to be representations, expressed or implied, of Delhi Poetry Slam.

Cover Design by Delhi Poetry Slam

First Edition

Published & distributed in India by Delhi Poetry Slam

ममता के लिए,
जो कि मेरी माँ भी हैं

To Mamta,
who also happens to be my mother

कुछ बातें

मैं ख़ुद को शायर कहने की हिमाकत तो नहीं करना चाहता, मगर क्यूँकि यह मजमुआ उसी हैसियत से मुकम्मल किया है इसलिए कोई और रास्ता भी नहीं है।

मैं समझता हूँ कि किसी भी शायर का कलाम बहुत लोगों के साथ और हौसले की वजह से मक़बूल होता है, तो इसमें कोई नई बात नहीं है कि मैं उन सभी का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

शुक्रिया माँ, हर इल्म, हर मोहब्बत, हर एक पल के लिए। शुक्रिया मिन्नी, हर क़दम पर मेरा साथ देने के लिए। शुक्रिया दिव्या, मेरी हर कमज़ोर नज़्म को पहली दफ़ा पढ़ने और प्रूफ़-रीड करके उसकी मरम्मत करने के लिए। शुक्रिया पापा, मेरे सभी कज़न्स, मेरे सभी दोस्त, जिनके बग़ैर मैं अधूरा हूँ।

अख़िर में मैं कहना चाहता हूँ कि मैं सौम्या चौधरी और डेलहि पोएट्री स्लैम का ताउम्र शुक्रगुज़ार रहूँगा। यह मजमुआ इनके मुझपे भरोसे और मुझे बक्शी रचनात्मक आज़ादी की वजह से ही मुमकिन हो सका है।

इस मजमुए में शामिल सभी नज़्में अपने वजूद से हिंदुस्तानी ज़बान की हैं। अंग्रेज़ी में केवल इनका तरजुमा किया गया है। बहरहाल, आख़री फ़ैसला मैं आप पर छोड़ता हूँ...

Foreword

I do not consider myself worthy of being referred to as a poet, but, since I have compiled this manuscript as one, I have no option but to do so.

I genuinely believe, that any poetry collection of a poet is made possible because of the efforts and encouragement of a lot of people, so it is nothing new that I would want to thank all such people.

Thank you Ma, for all the knowledge, all the love, and all the moments. Thank you Minnie, for being with me through each and every step of the way. Thank you Divya, for always being my first reader, and repairing my weak poems after proofreading all of them. Thank you Papa, all my cousins, my friends, without whom I am insufficient.

Lastly, I want to confess that I would be eternally grateful to Saumya Choudhury and Delhi Poetry Slam. It is only because of their belief, the creative freedom and space, which they offered me, that this collection could be conceivable.

All the poems in this collection are by origin, in Hindustani language. They have only been translated in English. Anyway, I leave the final call to you…

फ़ेहरिस्त

Contents

कहानी

Anecdote

१९५७

1947

मुल्क

Nation

मिट्टी के अंदर

Engulfed inside mud

जब तक कि

So long as

चार्ज

Charge

हिसाब

Measure

कोई कहता है

Someone wants

तलाश

Search

नफ़रत और आक्रोश के पार

Across hatred and anger

भूख

Hunger

पृथ्वी

Earth

आवाज़ें

Voice

जलती नज़्में

Burning Poems

शाम

Evening

मैं ये भी सोचता हूँ

I suppose

रातें

Nights

२३ मई २०१९

23 May 2019

बकरी मेरी चाची है

Goat is My Aunt

सटिस्टिकल ऑफ़िसर

Statistical Officer

मेरा नाम

My name

कहानी

मेरी भी इक कहानी है

मीर की सी वानी है

नींद में उलझी

अँगड़ाइयों कि जैसी

दरिया का बहता पानी है

मेरी जो ये कहानी है

कभी बैराग से उछलकर

ज़मीन टापते हुए

हवा के टुकड़ों पे पाँव पड़ते हैं तो

कभी ज़मीन पे गिरकर

टूटे परों को बीनता पाता हूँ ख़ुद को

कभी रूह के होने का एहसास भी होता है

कभी लगता है क्या है दुनिया?

क्या हूँ मैं और क्या कहानी है?

क्या पता मैं एक छोटा सा हिस्सा हूँ

ये मुझसे काफ़ी बड़ी कहानी है

रिश्तों से घिरा हूँ मगर

उनपे बस नहीं मेरा कोई

साथी मिलते तो हैं पर

साथ छूट जाने की

न ख़बर कोई न पता कहीं

जब मुड़के देखो तो

दूर दिखते हैं छोटे से

वो सब साथी जो साथ न रहे

मुझे तो चलते जाना है

कहनी बाक़ी कहानी है

ये कहनी मगर

आख़िर किसे सुनानी है

और क्यूँ पलट रहा हूँ मैं

ये सफ़्हे ज़रा सा चख के?

ये लफ़्ज़ कौन चुन रहा है?

कुछ मतलब है इनका

या सभी बे-मानी है?

ये मैं ही लिख रहा हूँ

या बस पढ़कर बतानी है?

उधड़े से गत्ते के

सफ़रनामे पे लिक्खी

ये हर किसी की ज़ुबानी है

हाँ, मेरी जो ये कहानी है

कही-सुनी, पुरानी है ।।

Anecdote

I too have an anecdote,
Like the ethereal Mir's quote;
Like yawns tangled,
Amidst the thread of sleepiness;
It is the river flowing to areas remote,
I too, have an anecdote.

I jump over reclusion's worth,
And across reality sometimes,
To step upon scattered pieces of winds;
I also tend to fall to the Earth,
To find myself collecting my broken wings;
Sometimes I feel the presence of soul,
Sometimes I question what is this world,
Who am I and what is this anecdote?
Maybe I am a small part of it,

This story is a lot bigger than my anecdote.

I'm surrounded by relationships,
But they can't be controlled;
I find friends but,
The moment of separation,
Could neither be predicted nor foretold;
When I turn around,
I see them so small, so far away,
All those companions who got astray;
I have to carry on though,
To tell the remaining anecdote.

This anecdote but,
To whom do I have to narrate?
And why I am I turning these pages,
Tasting them a bit, as I translate;
Are all the words meaningless,
Or do they have an expression?
Am I the one who is writing this,
Or only reading aloud what's written?
Written on a travelogue,
Made up of disheveled cardboards,
It is the voice of everyone,
Reaching out through the hordes;

Yes, I too have an anecdote,
Sung and spoken; heard and told.

फ़सादतों में जो क़त्ल हुए थे

चेहरे ही थे क्या बस वो

लाशें जिनके हवाले थीं

तकसीम की स्याह राहें

रौशन थीं जिनकी आग से

नाम ही थे क्या बस वो

या शक्लों की मशालें थी

एक चेहरा मेरे पास भी है

मैं सोचता हूँ ये किसका है

ये चेहरा जो मेरी शक्ल से

नजाने कब से चिपका है

ये चेहरा जो मेरी गर्दन पे

नजाने कब से खड़ा है

ये चेहरा जो मेरी सूरत पे

नजाने कब से पड़ा है

ये किन ख़यालों के होने का सबूत है

कौन मुक़र्रिर है कौन राजदूत है

वो ख़ून जो सड़कों पे है मुंजमिद

हिंदू की तरह महकता है

या मुसलमाँ की ख़ुश्बू है उसमें

क्या नाम था उस चेहरे का

जो बीस बरस के जिस्म से

कट के गिरा था सैतालिस में

वो सर जो उस चेहरे पे लगा था

ख़यालों का मालिक था

या इक ख़ुदा का ग़ुलाम

ख़ुदा तो बट गए थे ज़मीन के साथ

नाम और चेहरों का भी

क्या बँटवारा हुआ था ?

1947

Those killed in the riots,
Were they only faces,
Who used to own corpses?
With whom the dark paths,
Of partition were set alight,
Were they only names,
Or heads replaced with torches?
I too possess one face,
I think who's is it,

This face which, from sometime,

Is stuck below my head;

This face which, from sometime,

Is glued above my neck;

This face which, from sometime,

Has remained over my face;

Of carrying which thoughts, is it the validation?

Who's the ambassador, what is the legislation?

That blood, which is frozen on the streets,

Does it smell of a Hindu,

Or bears a Muslim's fragrance?

What was the name of that face,

Which, from a body of merely twenty,

Was slashed in forty-seven?

The head which was glued to that face,

Was it the master of some thoughts,

Or a slave of the gods?

Gods were divided along with the division of lands,

Were names and faces divided too?

मुल्क

मेरे सीने में नजाने क्यूँ

इक आह मौजूद सी रहती है

ये मुल्क मेरा, ये मेरा वतन

मैं सोचता हूँ

आख़िर क्या है वतन

क्या है हिंदुस्तान

क्या है भारत

क्या ये लकीरों से घिरा इक टुकड़ा है ज़मीं का

या हिमालय से हिंद महासागर की दूरी है

ये बहस है क्या कुछ सवालों की

या न्यूज़ चैनलों की मजबूरी है

कहीं ये सिर्फ़ एक नारा तो नहीं

और अगर है तो किस की मानिंद है

भारत माता की जय है वो

या वन्दे मातरम् या जय हिंद है

इंक़लाब ज़िंदाबाद की आवाज़ है

या राजनैतिक योजनाओं से बुना साज़ है

ये वो ख़याल है जिसे गांधी ने सजाया था

या वो सवाल जिसे मसलहत ने ठुकराया था

ये देश सिर्फ़ ख़याल तो हो नहीं सकता

धर्म जातियों के अंदर खो नहीं सकता

है मेरे दिल पे आई जो आख़िर कैसी खरोंच है

मैं मान नहीं सकता कि ये देश बस एक सोच है

ये पंजा-ए-ख़ूनी में क़र्ज़ के जो क़ैद हैं किसान

ये सरहद-ए-मुल्क पर जो मुस्तैद है जवान

ये लाचारी और बेबसी के मुँह से निकली कूक है

ये मुफ़्लिसों की गोद में जो पल रही वो भूख है

ये न ख़ुश्बू न सोच न किसी जज़्बात का ही ग़म है

सच तो ये है कि ये मैं हूँ, ये तुम हो, ये हम हैं, ये हम हैं।।

Nation

In my heart, for reasons not known to me,
There's a constant presence of a sigh,
My nation, my country,
I wonder what is it's identity,
What is India,
What is Bharat?
Is it nothing but a piece of land surrounded by political lines
Or just the distance between the Himalayas and the Indian Ocean

Is it only a debate for the sake of a few questions
Or merely the news channels' obligation
I wonder if it is but a slogan
Even if it is, which slogan is it
Is it Long Live India
Or Jai Hind, or Vande Matram
Is it the voice of Long Live Revolution
Or political policies' amalgamation
Is it the thought that Gandhi projected
Or a few questions which the policies rejected
This country can't be just an idea of a legion
It can't be trapped in the cobwebs of castes and religion
What bruises have appeared on the surface of my heart
I refuse to accept that this country is just a thought
It is the farmer who is confined within the bloody bars of debt
It is the soldier, the safety of border who has kept
It is helplessness's and unemployment's jointly shed tear
It is the hunger which is being raised as children by the poor
It is neither a fragrance, nor an idea; neither convenience, nor a fuss
The truth is that it is me, it is you, it is us, it is us.

मिट्टी के अंदर हूँ मैं

मिट्टी के अंदर हूँ मैं

मिट्टी जैसा महकता हूँ

मिट्टी से सने कपड़े हैं मेरे

इसकी ख़ुशबुओं में रहता हूँ

मैं हिंदुस्तान का किसान हूँ

पर मैं भी तो इंसान हूँ

क़र्ज़े और बदहाली में

मैं कैसे हल उठाऊँगा

कैसे लगेंगे अनाज के रेले

मैं कैसे फ़सल खिलाऊँगा

भूख तुम्हें भी है मैं जानता हूँ

तुम्हारे लिए ही तो मैं

इस हाल में भी खड़ा हूँ

मेरे भाई में हिम्मत ज़रा कम थी

कल कर ली ख़ुदकुशी उसने

कितनो को आख़िर हिम्मत दूँ

मैं कितनो को समझाऊँगा

याद रखना मगर फिर भी

कि अकाल के मौसम के दिन

तुम्हारी रोटी लाउँगा

मैं हिंदुस्तान का किसान हूँ

बहार बन के आऊँगा।।

Engulfed inside mud

I'm engulfed inside mud
I smell like mud
With mud, all my clothes are stained
I breathe inside its fragrance
I'm India's farmer
But I'm also human
In all this debt and adversity
How would I work the plough
How would the fields be decorated with hoisted crops
How would I make the earth blossom
You too are hungry, I understand,
For you only I'm standing tall amidst the miseries
My brother was not that hopeful
He committed suicide yesterday
To how many should I encourage
To how many should I empower
But remember, fellow Indian

That on the day of famine
Your Roti, I'll bring
I'm India's farmer
I'll drizzle as spring.

जब तक कि

जब तक कि मैं इक नज़्म को हल्के हाथों से

लिखूँ मिटाऊँ काटूँ फाड़ूँ और फेंक ना दूँ

तब तक मेरे सीने में क़ैद वो बेमानी सी बाक़ी नज़्में

कि जिनमे पोशीदा वो सारे दर्द हैं मेरे

जिन्हें मैं ज़िंदा करके मार चुका हूँ

जिनके सर मैं उगने ही पर काट चुका हूँ

उनके ख़ून के क़र्ज़ से आज़ादी मुझे कैसे मिलेगी?

कैसे कहूँगा नज़्मों से अपनी कि तुम भी मेरी हमनफ़ज़ हो?

तुम भी मेरी हमसफ़र हो

जब तुम्हें देखता हूँ तो दफ़ा के मानी कुछ और होते हैं

हर दफ़ा पहली ही लगती है

वो नज़्म जो दूर तनहा टापू पे लहरों के छपाके चुगती थी

उड़ते उड़ते आँगन में चम्पा की टहनी पर आ बैठी है

चोंच में इक नग़ामा फँसा कर लाई है

शायद नग़मे का घोंसला बनाएगी

ना तुमने ध्यान दिया और ना मैं ही रोक पाया नज़्म को

तुम्हें सौतन जानके हिसाब लेने आई है शायद

इस एहसास का इल्म है न ख़बर है उस नादान को

कि वो तागे लफ़्ज़ों के कि जिनसे उसने टापू पे वो नग़मा बुना था

वो तागे तो तुमसे ही खींच के कभी तोड़ लिये थे मैंने।।

So long as

So long as I do not, with soft hands,
Write, erase, cut, tear and throw a poem,
Rest of the meaningless poems trapped inside my heart,
In whom all my pains are hidden,
The pains whom I've killed after begetting,
Whose heads I have slashed as soon as they grew,
How'd I be free of the debt of their deaths?
How'd I say to my poems that you too are my beloved,
You too are my companion,
Every time I see you, the meaning of time changes,
Every time seems like the first time;
That poem, which used to peck the splashes of waves on that secluded island,
Has come flying and landed over the Champa in my balcony;
She has brought a song in it's beak;
I think she'd make a nest with it.
Neither you noticed nor could I ever stop her;
She thinks of you as the mistress and has come to avenge,
Poor her, she doesn't even have the slightest of hints,

That those threads of words with which she'd stitched the song on that island,
Those threads I had pulled and snapped from you a while ago.

चार्ज

दो हज़ार अठारह के ऑक्टूबर महीने में की बात है ये

सुना है कुछ लोगों पे कुछ चार्ज लगे हैं

इक ऐक्ट्रेस ने एक बड़े डिरेक्टर पे

“असॉल्ट” का चार्ज लगाया है

एक बड़े ऐक्टर पर भी रेप का चार्ज है

ऑनलाइन न्यूज़ में पढ़ा था कि नौ साल पुराना इक केस

फिर से खोल दिया गया है

इक महान फ़ुटबॉलर पर भी रेप का चार्ज था

किसकी बात कितनी सही है किसे पता है

हर सूरत में लोग ग़लत हैं

किसी ने काले नक़ाब पहने हैं तो किसी ने मुँह ही काला पुतवा रखा है

सन्नाटों की चीख़ें सड़कों पे गूँज रहीं हैं

वहशत के नाख़ून अब बढ़ने लगे हैं

ये मेरा हिंदुस्तान नहीं है

ये उनका हिंदुस्तान है जिन्हें सोने से ज़्यादा कोयला लुभाता है

जो शर्मिंदगी के ऊँचे फ़सीलों पे चढ़कर कालिक की बाल्टी उँड़ेल रहें हैं

आसमाँ काला पड़ चुका है, सवेरे काले हो चुके हैं

दीवारें काली रंग गयी है, चेहरे भी काले पुत चुके हैं

ये दुनिया इतनी काली क्यूँ है?

दो हज़ार अठारह के ऑक्टूबर महीने में की बात है ये

सुना है कुछ लोगों पे कुछ चार्ज लगे हैं

मैं सोचता हूँ ये सब सुनके आवाज़ उठेगी

मैं सोचता हूँ ये सब सुनके इक आग जलेगी

काली स्याही में घुला उन आँखों का समंदर इक सैलाब लाएगा

वहशत के नाख़ून कटेंगे, बदलाव आएगा।।

Charge

It is the October of twenty nineteen;
I've heard that a few people have been alleged with some charges.
An actress has charged a big director with assault;
An important actor has also been charged with rape;
I read online that a nine year old case has been reopened,
A great footballer of our times is also charged with rape;
Who knows who's allegation is right to what extent?
In every aspect, people are wrong.
Same have worn black masks while some have painted their faces black;
Screeches of lull are echoing on the roads,
Nails of Adversity are growing long;
This is not my India.

This is their India who are tempted more by coal than gold,
Who've climbed upon the high pillars of shamelessness and are inverting buckets,
Of black waters from there;
Sky has turned black, mornings have turned black,
Walls are painted black, faces are black,
Why is this world so black?
It is the October of twenty nineteen;
I've heard that a few people have been alleged with some charges;
I suppose, after witnessing this, a voice will rise;
I suppose, after witnessing this, a fire will incise;
Eyes floating in black waters would no more be strange;
The nails of Adversity would be clipped, times will change.

हिसाब

किस तराज़ू में मैं करूँ

इन लमहों का हिसाब

जो कट के गिर गए हैं

वो बिखरे पड़े हैं सब सामने मेरे

देख रहें हैं बेबसी भरी आँखों से मुझको

सोच रहा हूँ मैं कौन समझाए किसको

एक लम्हे ने पुछा मुझसे

मेरी पैदाईश याद है तुम्हें?

याद है कैसे मैं पला था पलों में?

पीछे पड़ा इक नादान सा लम्हा

टूटी साँसों में मुझसे बोला

मुझपे भरोसा है तुझे शायर?

या मैं भी सियासतदानो सा झूठा लगता हूँ तुझे?

कोने वाले लम्हे ने सिसकी सी छोड़ी

सामने वाले ने तो उम्मीद ही तोड़ी

मैं इनको अब क्या समझाऊँ

इनका दिल कैसे बहलाऊँ

इनको तो ये ख़बर तक नहीं

कि ये तो आधे आधे ही हैं सभी

आधा हिस्सा तो इनका मौजूद है वहाँ

जिनके साथ ये गुज़रे थे कभी ।।

Measure

Upon which scale should I measure,
The weight of those moments,
Which have passed and died;
All lie scattered in front of me;
They're looking at me with hopeless eyes;
Tell me, who should console who's cries?
One of them asked me,
Do you remember my birth?
Or how I was raised with raised expectations?
Lying far at the back, an innocent moment,
Said to me in broken breaths,
"Do you trust me, Poet?
Or am I also like a politician's promise to you?"
The moment lying in a corner let out a sigh;
The one closest to me let his smallest hope die;
What should I tell them, after all?
How should I entertain their fall?
They don't even have the slightest of hints,

That they’re only a half of their beings;
One half of their existence perpetually lies;
The people they were spent with, in their eyes.

कोई कहता है

कोई कहता है जंग का ऐलान करो

कोई कहता है बदले का फ़रमान भरो

तू ही बता मुझे क्या हासिल होगा अब

बेटा, तू मुझे अब मिलेगा कब ?

मेरी आँखें ता-उम्र रौशन रहेंगी अंधेरे से

रात का स्याह साया है अब हर सवेरे पे

चीख़ें सारी ख़ामोश खड़ी हैं

जीवन की नब्ज़ बेजान पड़ी है

मैं लड़ूँ तो किससे

कुछ कहूँ तो किससे

आज़ादी में ये कैसी हथकड़ी है

माँ होना भी अजीब इनायत है

छूटती नहीं, ये कैसी आदत है

नाउम्मीदी के टीले पे एक परिंदा है

मेरे ख़ून में बेटा तेरा ख़ून ज़िंदा है

दर्द के साये जब घेर लेंगे जान को

चल पड़ूँगी मैं समझाने आसमान को

सियासत और धर्म में गर न ये गिले होते

जो जंग ही ना होती तो क्या ये सिलसिले होते ?

कोई कहता है जंग का ऐलान करो

कोई कहता है बदले का फ़रमान भरो

यही है मेरे बाक़ी जीवन का सबब

बेटा, बता ना, तू मुझे अब मिलेगा कब ?

Someone wants

Someone wants to declare a war;
Someone wants vengeance's uproar.
Tell me what I'd get out of this anyhow;
My son, when will I get to see you now?
My eyes would always be alight by darkness,
Trails of night lurk all over brightness;
All the voices are standing in acute silence,
Pulse of life lies dead in its defense;
With whom, should I fight the fight?
And discuss this emotional plight?
Why am I handcuffed in independence?
Being a mother is a weird benevolence,
Impossible to abandon, is this routine observance;
On the hill of hopelessness, a bird thrives;
In my blood, son, your blood survives.
When shadows of pain start encircling my eyes,

I'd embark on a journey to explain all the skies-
If politics and religion were free of all grievances,
If there was no war, would there be such instances?
Someone wants to declare a war;
Someone wants vengeance's uproar.
Tell me what I'd get out of this anyhow?
My dear son, when will I get to see you now?

तलाश

किस कोने में कहकशाँ के क़ैद वो आकाश है
जिसमें क़ैद बारिशों की मुझको यूँ तलाश है

वो बूँदे टुकड़ा टुकड़ा कब बरसेंगी पूरे पर
कब जुड़ेगा वो जो आख़िर आज तलक पाश है

कटे छिले बदन पे घाव बरसों से फैलें हैं
भीग के ही भरेगी शायद ये वो ख़राश है

समंदर सामने है फिर क्यूँ ये हिचक दिल में
डूब के जी उठेगी सतह पे खड़ी जो लाश है

बहारों के मौसम में पतझड़ की सी महक क्यूँ है
आसमानों में ही शायद राज़-ए-मौसम फ़ाश है

किस कोने में कहकशाँ के क़ैद वो आकाश है
जिसमें क़ैद बारिशों की मुझको यूँ तलाश है

Search

At what corner of this galaxy are those skies confined;
In which those rains are trapped, whom I'm trying to find.

When would the partial drops fall upon its whole;
When would the broken return to be as it was designed.

Wounds lie persistently over the torn and bruised body;
Would be repaired only by being drenched, the contusions of such kind.

Ocean is in front of me then why am I hesitant;
This corpse, once drowned, should resume its humankind.

Why does the season of spring, smell of fall;
The secret of season, maybe the skies would unwind.

At what corner of this galaxy are those skies confined;
In which those rains are trapped, whom I'm trying to find.

नफ़रत और आक्रोश के पार

नफ़रत और आक्रोश के पार
कहीं एक ऐसा मंज़र मौजूद है
जहाँ दिलों में स्नेह है, ख़ुलूस है
मोहब्बत की मंज़िलें महफ़ूज़ हैं
ज़मीनों पे जो लकीरें हैं
मैंने देखी तो नहीं कभी पर होतीं महसूस हैं
ये बादलों पे क्यूँ नहीं खिंचतीं आख़िर
क्यूँ परिंदों और हवाओं के रिश्ते मज़बूत हैं
मैं सोचता हूँ ये कैसे क़ानून हैं
जिसमें न कोई रिहाई न क़ीमत-ए-ख़ून है
मशालों से लिपटी ये कैसी काली आग है
मिट्टी में सने ये सपने क्यूँ बेदाग़ हैं
ज़िंदा लाशों से सजे ये किसके क़ब्रिस्तान हैं
कौन पाकिस्तान है, कौन हिंदुस्तान है?

Across hatred and anger

Across hatred and anger,
A spectacle lies, away from detection;

Where hearts reek, of sincerity, of affection;
Where the terminus of love has undeniable protection.
Why the lines, which divide this land;
Which, I've never seen, yet felt their detention,
Could not ever be drawn in clouds?
Why birds and winds share a bond beyond election?
I ponder at the absurdity of these laws;
Where there's no discharge, no value of blood-loss;
Why is dark fire strapped 'round flaming torches?
Why are these mud-smudged dreams, free of filthy scorches?
Why are graveyards adorned by alive corpses in Absurdistan?
Who is India, and who is Pakistan?

भूख

मैं इक दिन क़दमों की धारी से

रस्ता काट रहा था

उसके टुकड़े सजा रहा था सफ़र की थाली में

भूख लगी थी

चखे जो राह के टुकड़े मैंने तो ये पाया

किसी में माज़ी के मोटे बीज थे कुछ

किसी में काँटे थे मुस्तकबिल के

पर भूख लगी थी

मैंने बीज वो सारे माज़ी के

निकाल के फेंक दिए तो ये देखा

एक पेड़ उगा फिर धरती से

और सबर का फिर फल फूटा

मैंने मुस्तकबिल के काँटों से

क़दमों की धारी और बढ़ाई

मैं आज भी उस क़दमों की धारी से

रस्ता काट रहा हूँ

सफ़र की थाली दरिया सी बेक़राँ है

वक़्त गुज़र रहा है दूसरी राह से

भूख लगी है।।

Hunger

Once I was breaking stones of my path,
With time as my device,
And decorating the pieces in journey's plate;
I was hungry.
When I tasted few pieces of the alley, I found,
Some had thick seeds of past inside,
While some contained thorns of future;
But I was hungry.
I collected all the seeds of past,
And threw them all away to find;
A tree grew up from within the Earth,
Bearing the blossomed fruit of patience;
Tempted, I started sharpening the edge of time,
With thorns of the future.
Even today I am breaking stones of my path,
With time as my device;
Journey's plate is limitless like an ocean;
Time is passing through another alley,
I am hungry.

पृथ्वी

भोर से पहले आँख खुली मेरी इक दिन
एक परिंदा बैठा था मेरे आँगन में
चोंचो में इक आग दबा कर बैठा था
टकटकी लगाए पूरब की जानिब
देख रहा था वो सूरज की जानिब
इल्म ना था मुझे उसकी आग का
उड़ान भर के उसने जब सूरज जलाया
अंधेरे वीरां जहाँ को तब पृथ्वी बनाया।।

Earth

Once I awoke before dawn,
A bird was sitting in my lawn;
She had a thread of fire in her beak;
Staring towards the eastern creak,
She was waiting for the Sun to rise;
About that fire, I was not so wise.
When she took flight to ignite Sun's dearth;
I saw the dark, lonely world being metamorphosed to Earth.

आवाज़ें

ये शहर जल रहा है

लपटें उठ रहीं हैं आसमानो तक

सुर्ख़ सुनहरी लपटों में चिल्लाती आवाज़ें

बिना गर्दन के ख़ामोश खड़ी हैं

जिस्म जलते जलते भाग रहें हैं

आवाज़ अब जिस्म का हिस्सा नहीं रही है

ये शहर जल रहा है

लपटें उठ रहीं हैं आसमानो तक।।

Voices

The city is burning,
Flames are rising up to the skies;
Voices, screeching inside golden-red flames,
Are standing beheaded, in silence;
Burning bodies are running aimlessly,
Voices no more, are a part of their existence;
The city is burning,
Flames are rising up to the skies.

जलती नज़्में

लाइटर से कभी इक नज़्म जलाकर
इक्का दुक्का कश लगा लेता हूँ मैं ख़यालों के
धुएँ के साथ कभी कभी
फेफड़ों में जमी उर्दू निकल आती है बाहर
खाँस के शांत नहीं पड़ती ये चिड़चिड़ाहट
कुछ ख़याल तो गर्दन में ही मर जाते हैं
ये कैसा क़र्ज़ है जिसे चुका रहा हूँ मैं
जलती नज़्मों से गिरती राख क्यूँ उठा रहा हूँ मैं
शायद ये वही ख़याल हैं जो मर चुके हैं
मुझे डर है कहीं ये हवा इन्हें उड़ा न दे ।।

Burning poems

Sometimes I light a poem with a lighter,
And smoke a few puffs of thoughts,
Along with the smoke, comes out,
The Urdu trapped inside my lungs;
Coughing does not calm this itching,
Some thoughts die within my throat;
What is this debt that I'm repaying?

Why am I collecting the ashes,
Falling off of the burning poems?
Perhaps these are the thoughts that had died,
I fear that the wind would blow them away.

शाम

सुबह रवाना होती है अब तो सीधा रात को वापस लौटती है

नजाने ठीक से कुछ खाती पीती भी है या नहीं

तबेयत कुछ नासाज़ लगती है आजकल उसकी

वो बचपन वाली धूप नहीं खिलती अब

ना शाम ढलती है सुर्ख़ सी वो

शाम कोई उफ़ुक पे रख के छोड़ गया है शायद

मठमैली धूल ऊँघ रही है किनारों पे उसके

कुछ सुकूँ के चिथड़े पड़े हैं आँगन में

सोचता हूँ एक उठाऊँ और साफ़ कर आऊँ मैं उसे ।।

Evening

Morning once leaves, returns in the evening;

Who knows if she eats well or not;

She seems a little indisposed lately;

Those childhood-afternoons don't bloom on her anymore,

Neither that twilight sets in nowadays.

Someone has forgotten the evening upon horizon perhaps;

Sludgy dust is drooling all over its edges;

Few rags of relief are lying in my balcony,

I think I should pick one up and mop the evening clean.

मैं ये भी सोचता हूँ

मैं ये भी सोचता हूँ कि मुझे काबे से है ज़हमत, है बुतख़ाने पे कुछ हैरत, है न नफ़रत की हिकायत की कौड़ी भर भी रियाज़त, ये हिदायत कि रियासत की हुकूमत करे गफ़लत के हर ज़र्रे को मोहब्बत से मोहब्बत, हो मोहब्बत से मोहब्बत,

मगर फिर कोसता हूँ ख़ुद को आख़िर क्यूँ है ये ज़हमत, है बुतख़ाने पे क्यूँ हैरत, ये सारे रास्ते क़ुदरत के जैसे वास्ते तुरबत से होके पास से बेहद निशाँ-ए-ख़ूँ से हैं रंगे ये सारे क़ाफ़िले, न है वो मसर्रत, कहीं तो गुम है मोहब्बत ।।

ज़रा सा थाम लूँ दिल हो कहीं जाए न वो दहशत, है जिसके मोड़ पे वहशत, हर इक पुरज़ोर मोहब्बत के आलम पर मुझे फ़ुरकत, न है ताक़त कि ये लज़्ज़त निवाला शौक से चख़ लूँ, मैं अपने पास कुछ रख लूँ, फिर अपनी साँस में भर लूँ, ख़ुश्बू-ए-ख़्वाब-ए-ख़िलाफ़त, न है मंज़िल की अलामत,

जो तुम बोलो तो मैं कह लूँ, तुम्हारे साथ मैं बह लूँ, तुम्हारे ख़्वाब में रह लूँ, कि जो मैं हूँ तुम्हीं तुम हो, कहीं बस भीड़ में गुम हो, यहीं वो शौक़-ए-शहादत, यहाँ बलिदान की आदत, ये हिंदुस्तान सलामत, हमारी है ये अमानत, न हो शमशीर-ओ-फ़सादत, मोहब्बत सिर्फ़ मोहब्बत, मोहब्बत सिर्फ़ मोहब्बत ।।

I suppose

I suppose I don't agree with the concepts of mosque and temple; I haven't practiced the story of hatred; I suggest that the leadership of the country should convert all resentments to love, and spread love with love;

But then I think, why do I bother about mosque and temple; I feel that all these paths, and these crowds, colored in blood, have touched graveyards and returned for the sake of nature; yet there is no happiness; lost somewhere, is love.

I should keep calm or else a panic could ensue, which would result in madness; I am cynical about the power of love; I don't have the energy to taste this tempting bite with passion; to keep something for myself, and fill in my breaths, the fragrance of rebellious dreams; I don't see any signs of my destination;

If you say, then I would speak; I would flow with you; I would live in your dreams; for who I am is nothing but you; but you are lost in this horde; this is where martyrdom is cherished; where sacrifice is practiced; this is our inheritance; there shouldn't be any swords and riots; there should be love; love and only love.

रातें

वो रातें जो कटा करती थीं तुम्हारी आँखों की सोहबत में
वो रातें अब भी कहीं तो कटती होंगी
मगर वो सुबहें जो तुम्हारे चेहरे पे खिलती थीं
अब नहीं खिलतीं वो अब मुरझाने लगीं हैं
बस एक सूरज निकलता है और अंधेरा ढक देता है
मैं गीले कपड़े से पोंछता रहता हूँ कि आसमाँ रौशन रहे
मगर अंधेरे चाँद का लालच देके सूरज को घेर लेते हैं
वो रातें जो कटा करती थीं तुम्हारी आँखों की सोहबत में
वो रातें अब भी कहीं तो कटती होंगी
कि उनकी नब्ज़ से ख़ून के क़तरे टपकते हैं मेरी छत से
मेरी आँखों में गिरते हैं मुझे सोने नहीं देते।।

Nights

Those nights which went on in the shade of your eyes' sizzle,
Those would still be going on somewhere, some place,
But those mornings which blossomed at your beautiful face,
They do not blossom, they have started to shrivel;
Only a Sun rises and covers all the darkness, dwindling;
I keep on sweeping the skies with a wet cloth,

So that the murkiness remains alight and enkindling,
But the glooms trick the Sun like flame tricks a moth.
Those nights still go on in the shade of your eyes' sizzle,
For of droplets of blood, there's a continual drizzle,
From their slit veins, throughout the night's keep;
It trickles on my face and doesn't let me sleep.

२३ मई २०१९

साल दो हज़ार ऊनीस का है और तारीख़ तेईस मई की

सुबह के सात बजे हैं और दिल में इक कसक सी कूक रही है

जी चाहता है कि वक़्त आगे न बढ़े

क्यूँकि आगे नजाने कैसे मंज़र बेताब खड़े हैं

आज चुनाव विचारधारा का है

आज दाँव पे सोच लगी है

मन में बेचैनियों का इक सैलाब जैसे

ख़ामोशी की गर्द में गुमसुम घूम रहा है

होना क्या है किसे ख़बर है किसे पता है

साल दो हज़ार ऊनीस का है और तारीख़ तेईस मई की

23 May 2019

The year is twenty nineteen and the date is twenty third of May,
It is seven in the morning and a niggle is filling the gaps of my breaths;
I wish for time to stop at this moment,
Because who knows what fate is awaiting us;
Today, it is the election of ideologies;
Today, the thought is at stake;

It seems that a sea of anxiety,

Is whirling hopelessly in the silence of my heart.

What would happen, no one knows, no one understands;

The year is twenty nineteen and the date is twenty third of May.

बकरी मेरी चाची है

अब समझा मैं

जब देखा नुक्कड़ की दुकाँ पर

चार बकरियाँ खाल-छिली

लटकी पड़ीं थीं टाँको पर

एक चाची थी मेरी

बाक़ी बुआ, मामी और मौसी थीं शायद

जी चाहा कि कसाई से दुश्मनी लूँ मोल

जाकर के मैंने बोला उसको

भाई एक किलो पैक कर देना

छोटे छोटे पीसेज़ में

खाते खाते ख़याल आया

अच्छा हुआ ये बकरी दूसरी थी

कोई रिश्तेदार होती तो भला कैसे खाता

तब समझा मैं

गाए माता जो है हमारी

तभी शायद माँ को दर्जा न दे पाए कभी माँ का

क्यूँकि माँ तो गाए है

और बकरी चाची

चाँद मामा है

और सूरज ताऊ ।।

Goat is my aunt

At last I understood,
When, at the street corner shop, I saw
Excoriated goats, four of them,
Hanging on the metal hooks;
Out of them, one was my aunt;
Others were my mother's and father's sisters I suppose;
I was filled with rage and went straight to the butcher,
Pack one kg in small pieces, I told;
While eating, I thought,
Thank goodness this one is not related to me,
Otherwise how would I have eaten it;
Then I understood,
Of course Cow is our mother;
That is why we could never give that spot to the real ones;
Because the real mother is Cow;
And aunt is goat;
The moon is uncle;
And the Sun, next of kin.

स्टटिस्टिकल ऑफ़िसर

गाँव की कच्ची गलियों से

कच्ची धूप में गुज़रते

मैं देखती हूँ

उधड़े उधड़े से दिखते हैं

वो मिट्टी के से घर सारे

मैं सोचती हूँ

मेरे हिस्से में क्यूँ नहीं

ये मिट्टी के मंज़र आए?

मगर जब किवाड़ वो खुलते हैं

टीस भारी कराहने की आवाज़ लिए

मैं देखती हूँ

किसी उम्मीद ने रोज़गार की पुरानी

चादर ओढ़ी होती है

किसी ने धन-विद्या का नया

लिबास लपेटा होता है

डायरी में बेमतलब से निशाँ और डेटा भरते भरते

मैं बेबसी की गफ़लत को

उम्मीदों की हसरत के पीछे छुपते

उधड़े उधड़े से घरों में

उजले उजले से चेहरे देखती हूँ

मैं सोचती हूँ

मेरे हिस्से में क्यूँ न ये

उम्मीदों के गुमाँ आए?

मेरे हिस्से में घर नहीं

बस मिट्टी के मकाँ आए ।।

Statistical Officer

Treading through the tracks of dirt,
Of the village street in scorching heat,
I see houses made with bricks of hurt;
I wonder,
Why did this spectacle of sludge,
Not fall under my share of life?
But when the doors open,
Letting out a painful sigh,
I see,
One hope cozying up inside,
A filthy linen of employment;
And the other wearing a rather bright,
Attire of education, of empowerment;

Filling up the meaningless gaps of my diary,
With unnecessary data and tick marks,
I catch a glimpse of helplessness,
Hiding behind some hopefulness;
In this spectacle of social sludge,
I see faces sans a shadow of grudge,
I wonder,
Why did these imprints of hopes,
Not mark my share of blood;
In my share there were no homes,
Only houses made of bricks and mud.

मेरा नाम

मेरा नाम सुना है तुमने

किसी अख़बार में पढ़ा होगा

शायद कभी देखा भी हो

तुम में से ही एक हूँ मैं, पर तुम सब से अलग हूँ

मुफ़लिसी के गाँव में

कुँआ अलग थलग है मेरा

भूख से प्यास बुझाई है मैंने

प्यास से भूख मिटाई है

बदन पे चाबुक खाए हैं मैंने

ज़मीन की कुर्सी बनाई है

इन्साफ़ से कभी न बनी मेरी

अन्याय से मित्रता निभाई है

जो तुम में कभी न घुल-मिल सका

वो शक़्स असम्मिलित हूँ मैं

सिर्फ़ समाचारों में कथित हूँ मैं

इल्म-ओ-आराम से रहित हूँ मैं

देखो मुझे, समझो मुझे

दलित हूँ मैं, दलित हूँ मैं।

My name

You must've heard my name,
Maybe read in some newspaper;
May even have seen me;
I'm one of you only,
Still I'm set aside;
In the village of poverty,
The well from which I drink is separated;
I have quenched my thirst with hunger,
And satiated my hunger with thirst;
I've been whipped and beaten endlessly;
I've made the Earth my chair;
I was never friends with justice,
But to injustice, I've always been fair;
The one which couldn't be one of you,
I am that isolated, in transit;
I've only been told of in news channels;
I've been without education and luxury's wit;
Look at me, understand me,
I am Dalit, I am Dalit.

Delhi Poetry Slam

www.delhipoetryslam.com

Freedom of Awaaz is a collection of poetry which pushes the frontiers of exploring a nation's ongoing struggle to freedom. Kunwar Digvijay puts into words the devastating tragedy of being held back by a regressive mindset. Painfully revealing and dark, Freedom of Awaaz is a book boiling with raw emotions and hopeful anecdotes which inspire generations to come with a careless dream: yes, change is possible. Kunwar has sketched a lustrous map for all non-conformists to follow the light where we too can finally discover the courage to let go of suffering and take our power back.

Kunwar Digvijay is the winner of Wingword Poetry Prize 2018. Delhi Poetry Slam has published his debut collection of poetry 'Kaagaz Ke Khwaab' in 2019, a collection of Hindustani language poems which explore the dreams and perceptions of a poet. Born and brought up in Delhi, poetry has always captured his fascination and at the age of twenty five (as of 2018) he's well on his way to explore the contours of Hindustani language poetry. He strives to continue his poetic journey with honesty and earnestness.

ISBN 978-81-935082-9-9
9 788193 508299

INR 200| USD 4

Published by
Delhi Poetry Slam
www.delhipoetryslam.com